"उपकल्पना"
(Hypothesis)

Priyanka
D2

Page No.
Date : / /201

अवधारणा :- (Concept)

सामाजिक शोध के अंतर्गत तथ्यों का नियंत्रित और वस्तुनिष्ठ रूप से अध्ययन करने में उपकल्पना की एक महत्वपूर्ण भूमिका है। शाब्दिक रूप से परिकल्पना शब्द दो शब्दों के योग से बना है - "परि" तथा "कल्पना"। 'परि' का अर्थ है "चारों ओर" तथा 'कल्पना' का अर्थ है "एक सामान्य अनुमान"। इस प्रकार किसी भी अध्ययन को जो सामान्य अनुमान चारों ओर से प्रभावित किए रहता है, उसी को हम उपकल्पना ~~कहते हैं~~ / प्राक्कल्पना / परिकल्पना कहते हैं।

शोधकर्ता कोई भी अनुसंधान कार्य आरंभ करने से पहले ही अपने विषय के विभिन्न पक्षों से संबंधित कुछ सामान्य अनुमान अवश्य लगा लेता है जिसकी प्रामाणिकता की परीक्षा बाद में एकत्रित किये गए तथ्यों के आधार पर की जाती है। इसकी सहायता से ही शोधकर्ता को अध्ययन से संबंधित वास्तविक दिशा प्राप्त हो जाती है और वह इधर-उधर भटकने से बच जाता है।

उदाहरण के लिए, यदि हमारा उद्देश्य बाल-अपराध के कारणों को ज्ञात करने के लिए कोई वैज्ञानिक अध्ययन करना है तो अध्ययन के पूर्व ही हम यह उपकल्पना बना सकते हैं कि 'टूटे हुए परिवार'

Scanned by CamScanner

अथवा दोषपूर्ण संगति बाल-अपराध का प्रमुख कारण है। ऐसी स्थिति में हम प्राप्त तथ्यों के आधार पर यह देखने का प्रयत्न करेंगे कि अध्ययन के आरंभ में जिस उपकल्पना का निर्माण किया गया था वह किस सीमा तक सही अथवा गलत है।

परिभाषाएँ (Definitions) :-

विभिन्न विद्वानों ने उपकल्पना की प्रकृति को विभिन्न रूप से स्पष्ट किया है :-

i) लुण्डबर्ग के अनुसार, " उपकल्पना एक कामचलाऊ सामान्यीकरण है जिसकी सत्यता की परीक्षा अभी बाकी है।"

ii) गुडे तथा हाट के अनुसार, " उपकल्पना एक ऐसी मान्यता है जिसकी सत्यता को सिद्ध करने के लिए उसकी परीक्षा की जा सकती है।"

iii) बोगार्डस के अनुसार, " उपकल्पना परीक्षण के लिए प्रस्तुत की गयी एक मान्यता है।"

उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि उपकल्पना किसी विषय से संबंधित एक सामान्य अनुमान अथवा विचार है जिसके संदर्भ में ही संपूर्ण अध्ययन किया जाता है। अनुसंधान कार्य के अंत में उपकल्पना, उपयोगी निष्कर्ष प्रस्तुत करने तथा पूर्व-निष्कर्षों का सत्यापन करने में सहायता करती ~~देती~~ है। यदि अध्ययन

Scanned by CamScanner

के द्वारा एकत्रित तथ्यों के आधार पर कोई उपकल्पना सत्य प्रमाणित होती है तो उसे एक सिद्धांत के रूप में स्वीकार कर लिया जाता है। और यदि वह सत्य प्रमाणित नहीं होती तो उसे अस्वीकार कर दिया जाता है।

उपकल्पना की विशेषताएँ :- (Characteristics of Hypothesis)

गुडे तथा हाट ने उपयोगी उपकल्पना की पाँच विशेषताओं का उल्लेख किया है जो निम्नांकित हैं :-

1.) स्पष्टता (Clarity)

एक अध्ययनकर्ता अपने अध्ययन के लिए जिस उपकल्पना का निर्माण करता है, उसकी भाषा और अर्थ इतना स्पष्ट और निश्चित होना चाहिए जिससे उसकी मनमाने अर्थ में विवेचना न की जा सके। उपकल्पना में प्रयुक्त किये गए शब्दों को स्पष्ट रूप से परिभाषित होना चाहिए तथा किसी अवधारणा को परिभाषित करते समय ऐसी भाषा का प्रयोग किया जाना चाहिए जिससे सभी लोग उसे समान अर्थ में समझ सकें।

2.) अनुभवसिद्धता (Empiricism)

उपकल्पना में अनुभवसिद्ध प्रामाणिकता का होना अत्यधिक आवश्यक है। इसका

Scanned by CamScanner

Date : / /201

तात्पर्य यह है कि उपकल्पना का निर्माण करते समय अनुसंधानकर्ता को यह ध्यान रखना चाहिए कि उपकल्पना किसी आदर्श को प्रस्तुत करने वाली न हो बल्कि उसके द्वारा किसी विचार अथवा अवधारणा की सत्यता की परीक्षा की जा सके। उदाहरण के लिए, 'सभी अधिकारी भ्रष्ट होते हैं' अथवा 'पूँजीपति श्रमिकों का शोषण करते हैं।' यह आदर्शात्मक कथन है। ऐसी उपकल्पनाएँ अनुभवसिद्ध नहीं होतीं और इसलिए इन्हें वैज्ञानिक उपकल्पनाएँ नहीं कहा जा सकता।

3.) विशिष्टता (Specificity)

उपकल्पना सामान्य न होकर विशिष्ट होनी चाहिए। यदि अध्ययन-विषय के सभी पक्षों को लेकर एक सामान्य उपकल्पना का निर्माण कर लिया जाता है तो अध्ययनकर्ता एक समय में ही विषय के सभी पक्षों का यथार्थ अध्ययन नहीं कर सकता। अतः इस दृष्टिकोण से उपकल्पना का निर्माण करते समय यह ध्यान रखना आवश्यक है कि उपकल्पना अध्ययन-विषय के किसी विशेष पक्ष से ही संबंधित हो। इस प्रकार अध्ययनकर्ता अपना ध्यान एक विषय पर केन्द्रित करके वास्तविक सूचनाएँ प्राप्त कर सकता है।

4.) उपलब्ध प्रविधियों से संबंद्ध (Related with Available techniques)

Scanned by CamScanner

Page No.
Date : / /201

हमारी उपकल्पना ऐसी होनी चाहिए जिसका उपलब्ध प्रविधियों द्वारा परीक्षण किया जा सके। सामाजिक घटनाओं की प्रकृति इतनी जटिल और परिवर्तनशील होती है कि कभी-कभी उपलब्ध प्रविधियों के आधार पर उपकल्पनाओं का निर्माण करना संभव नहीं होता। ऐसी स्थिति में शोधकर्ता अपनी उपकल्पना की सत्यता की जाँच करने के लिए नयी प्रविधियों को विकसित करता है।

5.) सिद्धांतों से संबंधित.
(Related with Existing Theories)

उपकल्पना का निर्माण करते समय यह ध्यान रखना आवश्यक है कि वह पहले प्रस्तुत किये गए किसी सिद्धांत या सिद्धांतों से संबंधित हो। इस आधार पर बनायी गई उपकल्पना अधिक क्रमबद्ध होती है। यदि कोई उपकल्पना किसी भी सिद्धांत से संबंधित नहीं होती तो उसकी सत्यता की परीक्षा करना अक्सर बहुत कठिन हो जाता है। यही कारण है कि किसी उपकल्पना का निर्माण करने से पहले अध्ययन विषय से संबंधित साहित्य और ज्ञान को समझना आवश्यक होता है।

उपर्युक्त विवेचनाओं से स्पष्ट है कि इन सभी विशेषताओं के समावेश होने पर ही कोई भी उपकल्पना वैज्ञानिक साबित हो सकती है।

Scanned by CamScanner

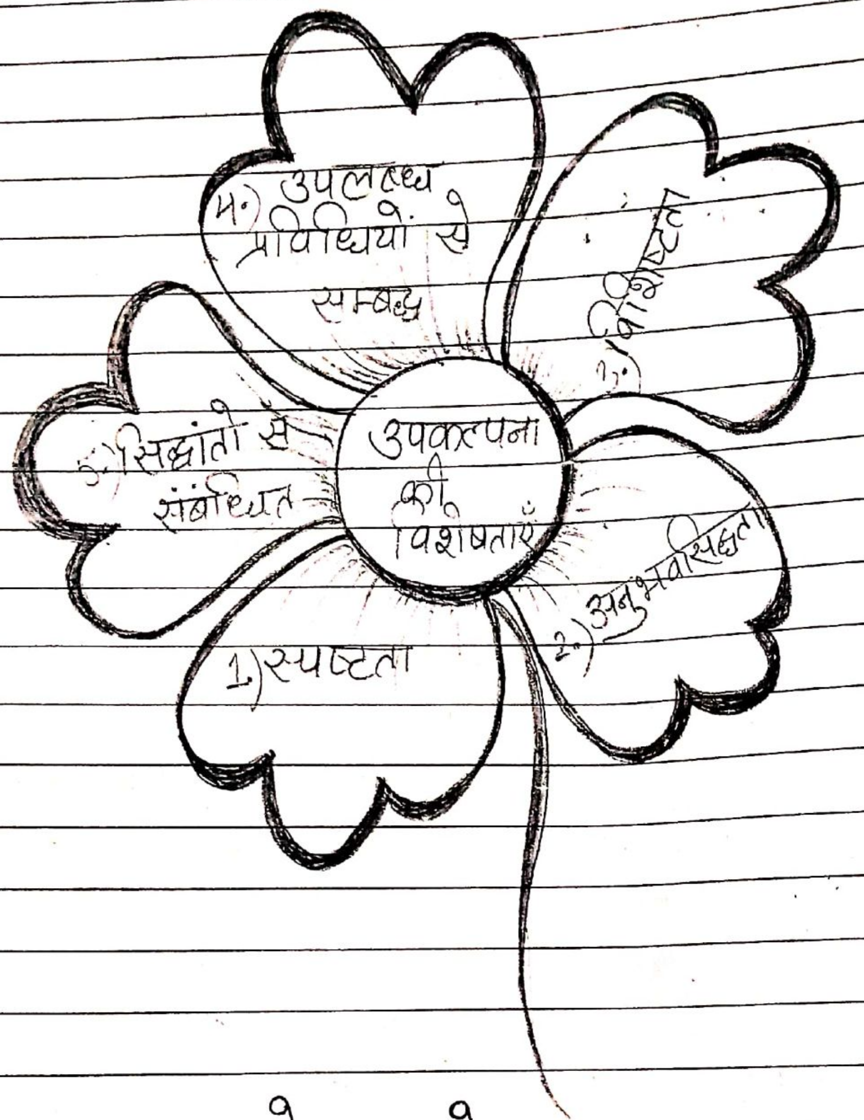

☞ उपकल्पना के स्त्रोत :-
(Sources of Hypothesis)

ऐसे कई वैयक्तिक एवं बाह्य स्त्रोत हैं जिनकी सहायता से उपकल्पना का निर्माण किया जा सकता है। वैयक्तिक आधार पर अनुसंधान कर्ता अपनी प्रतिभा, दूरदर्शिता, विचारों की मौलिकता तथा अनुभव के आधार पर उपकल्पना का निर्माण कर सकता है।

किंतु जब अनुसंधानकर्ता किसी अन्य व्यक्ति के द्वारा प्रतिपादित एक

सामान्य विचार के आधार पर अपनी उपकल्पना का निर्माण करता है तो उसे उपकल्पना का बाह्य स्त्रोत कहा जाता है। उपकल्पना के निर्माण हेतु आवश्यक स्त्रोत निम्नांकित हैं :—

1.) सामान्य संस्कृति (General Culture)

मानव की गतिविधियों को प्रभावित करने में संस्कृति का योगदान अत्यधिक महत्वपूर्ण होता है क्योंकि व्यवहार व्यक्ति के व्यवहार और उसका अंतर उसकी संस्कृति के अनुरुप ही होता है। इस प्रकार जब अनुसंधान - कार्य के लिए किसी उपकल्पना का निर्माण किया जाता है तो उस पर भी एक समाज विशेष की संस्कृति का स्पष्ट प्रभाव पड़ता है। उदाहरण के लिए, यदि हम सामाजिक गतिशीलता के कारणों का अध्ययन करने के लिए किसी उपकल्पना का निर्माण करना चाहते हैं तो भारत तथा अमेरिका में सामाजिक अध्ययनकर्ता इससे संबंधित भिन्न - भिन्न उपकल्पनाओं को लेकर अध्ययन कार्य आरंभ करेंगे क्योंकि इन दोनों समाजों की संस्कृति एक - दूसरे से अत्यधिक भिन्न है।

2.) वैज्ञानिक सिद्धान्त (Scientific Theories)

समय - समय पर प्रस्तुत किये जाने वाले वैज्ञानिक सिद्धान्त भी उपकल्पनाओं के निर्माण का एक महत्वपूर्ण स्त्रोत है।

Scanned by CamScanner

विभिन्न विषयों से संबंधित विभिन्न सिद्धांत ही अध्ययनकर्ता को वह सामान्य ज्ञान प्रदान करते हैं जिनकी सहायता से वह एक विशेष उपकल्पना का निर्माण कर पाता है। उदाहरण के लिए, रिज़ले तथा नेसफील्ड ने भारत में जाति-प्रथा की उत्पत्ति का अध्ययन करने के लिए जिन उपकल्पनाओं को प्रस्तुत किया, उनका निर्माण जाति-प्रथा की उत्पत्ति से संबंधित पहले के सिद्धांतों के आधार पर ही करना संभव हो सका।

3.) समरुपताएँ (Analogies)

जब कभी भी दो दशाओं के बीच कुछ समानताएँ दिखाई देती हैं तो अक्सर उनके आधार पर कुछ नई उपकल्पनाओं का निर्माण हो जाता है। उदाहरण के लिए, स्पेन्सर द्वारा सामाजिक उद्विकास की धारणा को प्रस्तुत करने के लिए जिन उपकल्पना का निर्माण किया गया वह इस सादृश्य पर आधारित थी कि समाज की उत्पत्ति, विकास और विनाश, जीव-रचना के जन्म, विकास और मृत्यु के ही समान है।

4.) व्यक्तिगत अनुभव (Personal Experiences)

जब कभी भी कोई व्यक्ति कुछ विशेष परिस्थितियों में घटनाओं को एक विशेष रुप से घटित होते हुए देखता है तो उसके मन में कार्य-कारण संबंध की एक

Scanned by CamScanner

विशेष धारणा बन जाती है। यही धारणा उपकल्पना के निर्माण का महत्वपूर्ण स्त्रोत बनती है। उदाहरण के लिए, 'लम्ब्रोसो' ने एक चिकित्सक होने के पश्चात भी अपने व्यक्तिगत अनुभवों के आधार पर इस उपकल्पना का निर्माण किया कि "अपराधी जन्मजात होते हैं तथा अपनी शारीरिक विशेषताओं में वे सामान्य व्यक्तियों से भिन्न होते हैं"। बाद में एकत्रित तथ्यों के आधार पर यह उपकल्पना सत्य प्रमाणित हुई।

5) शोध-सार (Research abstracts)

शोध-सार का तात्पर्य पहले किये गए शोधों के सारांश एवं निष्कर्ष से है। भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में प्रति वर्ष किये गए अनुसंधानों के सारांश एवं निष्कर्ष को संक्षेप में एक ही साथ प्रकाशित कर दिया जाता है जो पुस्तकालयों या शोध-संस्थानों में उपलब्ध होते हैं। इसके द्वारा नये शोधकर्ता उनका अध्ययन करते हैं और प्राप्त सूचनाओं के आधार पर परिकल्पना का निर्माण करते हैं।

6) शोध पत्रिकाएँ (Research Magazines)

शोध पत्रिकाएँ भी एक अत्यंत महत्वपूर्ण एवं आवश्यक स्त्रोत हैं जिसकी सहायता से उपकल्पना का निर्माण किया जा सकता है। ये शोध-पत्रिकाएँ

Scanned by CamScanner

Date: / /201

दैनिक, साप्ताहिक एवं मासिक किसी भी प्रकार की हो सकती है। इसके अंतर्गत विभिन्न विषयों के विभिन्न पक्षों से संबंधित कई आवश्यक जानकारियाँ होती हैं तथा समय-समय पर इसमें नए तथ्यों का समावेश भी होता रहता है जो हमारे उपकल्पना के निर्माण में सहायक सिद्ध होती है।

7.) संगत पुस्तकें (Relevant books)

परिकल्पना का एक सरल स्रोत संगत पुस्तकें हैं। शोधकर्ता जिस क्षेत्र में शोध करना चाहता है, उस क्षेत्र से संबंधित पुस्तकों का अध्ययन करके जो सूचनाएं प्राप्त करता है उसके आधार पर उपकल्पना का निर्माण करना संभव होता है। उदाहरण के लिए, यदि शोधकर्ता सर्जनात्मकता के क्षेत्र में शोध करना चाहता है तो वह सर्जनात्मकता से संबंधित पुस्तकों का अध्ययन करके उपकल्पना बना सकता है कि "बुद्धि तथा सर्जनात्मकता के बीच मध्यम धनात्मक सहसंबंध होता है।"

8.) व्यक्तिगत रुचि (Personal Interest)

परिकल्पना की रचना में शोधकर्ता की अपनी रुचि तथा सामर्थ्य भी काफी सहायक होती है। शोधकर्ता उसी विषय में समस्या ढूँढता है और परिकल्पना की रचना करता है, जिस विषय में उसकी व्यक्तिगत रुचि होती है। वह उस विषय में जितना अधिक दक्ष तथा

Scanned by CamScanner

समर्थ होता है, उतना ही जल्दी परिकल्पना के निर्माण में सफल होता है।

9.) विरोधी परिणाम (Conflicting results)

परिकल्पना के निर्माण का आधार किसी विषय के संबंध में विभिन्न शोधकर्ताओं के विरोधी परिणाम हैं। नया अनुसंधानकर्ता विरोधी परिणामों को ध्यान में रखते हुए किसी निश्चित परिणाम पाने के लिए अनुकूल परिकल्पना की रचना कर सकता है।

10.) विशेषज्ञ के विचार एवं निर्देश (Expert's opinion and guidance)

परिकल्पना की रचना का यह सबसे उपयोगी स्रोत है। शोधकर्ता जिस क्षेत्र में शोध करना चाहता है, वह उस क्षेत्र के अनुभवी तथा प्रशिक्षित विद्वानों से संपर्क स्थापित करता है और उनके द्वारा दिये गए सुझावों तथा सलाहों के आधार पर समुचित परिकल्पना की रचना करता है। जब कभी नये शोधकर्ता को परिकल्पना बनाने में किसी तरह की कठिनाई महसूस होती है, तो वह विशेषज्ञ के साथ विचार-विमर्श करता है और उनके द्वारा दिये गए निर्देशनों से लाभ उठाकर परिकल्पना बना लेता है।

इस प्रकार स्पष्ट हो जाता है कि परिकल्पना की रचना,

Scanned by CamScanner

निर्धारण या प्रतिपादन के उपर्युक्त कई स्त्रोत है। साथ ही एक समय में एक से अधिक स्त्रोतों की सहायता से उपकल्पना का निर्माण किया जा सकता है।

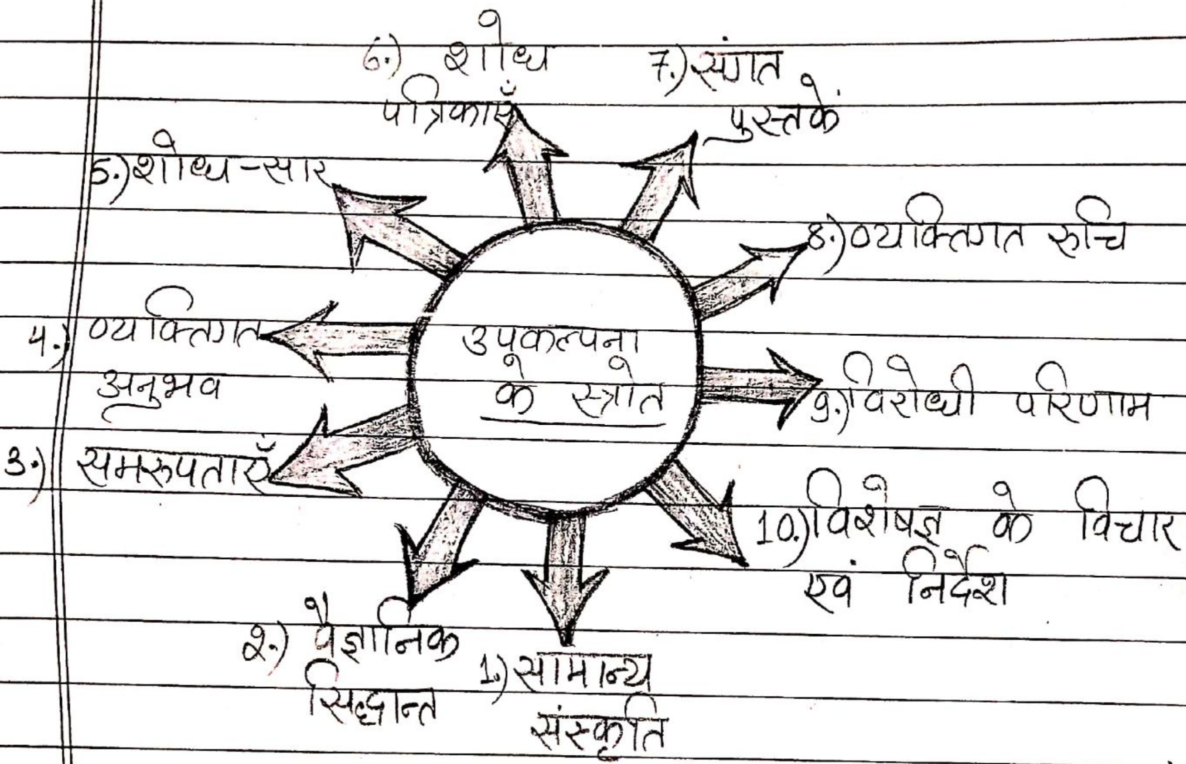

उपकल्पना के प्रकार :-
(Types of Hypothesis)

सामाजिक समस्याओं तथा सामाजिक घटनाओं का क्षेत्र अत्यधिक व्यापक होता है, जिसके कारण उपकल्पनाओं की संख्या भी उतनी ही अधिक और विविधतापूर्ण हो सकती है। इसके पश्चात भी "गुडे तथा हाट" ने सभी उपकल्पनाओं के तीन प्रमुख कारको का उल्लेख किया है जो निम्नलिखित है :-

Page No.
Date : / /201

(1) अनुभवसिद्ध समरुपताओं से संबंधित उपकल्पनाएँ
(Hypothesis related to Empirical Uniformities)

इस श्रेणी की उपकल्पनाएँ व्यक्ति के सामान्य जीवन में प्रचलित विचारों, मान्यताओं, विश्वासों, कहावतों और किंवदन्तियों पर आधारित होती हैं। ऐसी उपकल्पनाओं का परीक्षण केवल सामान्य अवलोकन के आधार पर नहीं किया जा सकता बल्कि इसके लिए अनुभवसिद्ध सर्वेक्षण करना आवश्यक होता है। उदाहरण के लिए, यह विश्वास कि 'बिल्ली द्वारा रास्ता काटना अशुभ होता है' अथवा 'गंजा व्यक्ति धूर्त और धनवान होता है', किसी ऐसी उपकल्पना के निर्माण में सहायक नहीं हो सकते जिसकी वास्तविक तथ्यों के आधार पर परीक्षा की जा सके। इसके पश्चात भी ऐसे विश्वासों के प्रभाव की सीमा को केवल अनुभव के आधार पर ही समझा जा सकता है।

2.) आदर्श प्रारुपों से संबंधित उपकल्पनाएँ
(Hypothesis related to complex Ideal type)

इस श्रेणी के अंतर्गत वे उपकल्पनाएँ आती हैं जिनका उद्देश्य तर्कपूर्ण ढंग से विभिन्न कारकों के बीच पाए जाने वाले सहसम्बन्ध को बताना होता है। ऐसी उपकल्पना की परीक्षा करने के

Scanned by CamScanner

लिए सर्वप्रथम संबंधित तथ्यों को एकत्रित किया जाता है और बाद में तथ्यों के तर्कपूर्ण क्रम को आदर्श मानकर सामान्य निष्कर्ष प्रस्तुत किए जाते हैं। उदाहरण के लिए, यदि हम बाल-अपराध के विभिन्न कारकों जैसे अशिक्षा, पारिवारिक विघटन तथा गरीबी को देखें तो यह स्पष्ट होता है कि सभी कारक तर्कपूर्ण ढंग से एक-दूसरे से संबंधित होते हैं।

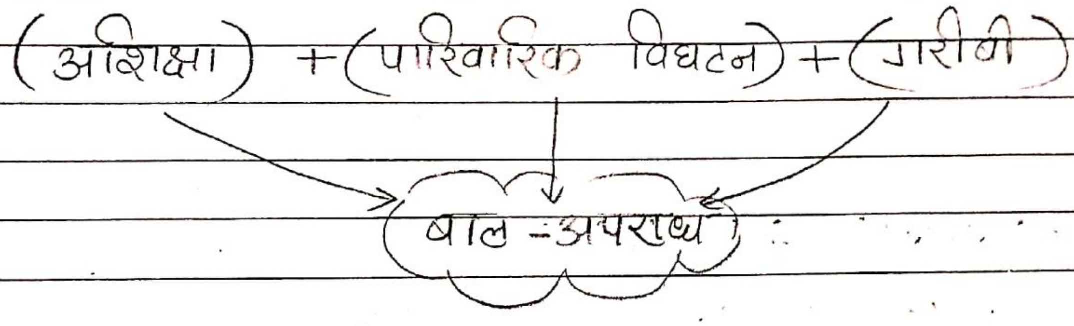

3.) विश्लेषणात्मक चरों से संबंधित उपकल्पनाएँ (Hypothesis related to Analytical Variables)

इस श्रेणी की उपकल्पनाओं का उद्देश्य विभिन्न चरों का तार्किक विश्लेषण करना ही नहीं होता बल्कि विभिन्न चरों के बीच पाये जाने वाले सह-संबंध को भी प्रदर्शित करना होता है। उदाहरण के लिए, यदि हम इस उपकल्पना को लेकर चलें कि "निर्धनता के लिए कोई एक कारक उत्तरदायी नहीं है बल्कि अनेक कारक संयुक्त रूप से निर्धनता में वृद्धि करते हैं" तो इस उपकल्पना की परीक्षा के लिए सभी कारकों के सह-संबंध को स्पष्ट करना आवश्यक होगा।

Scanned by CamScanner

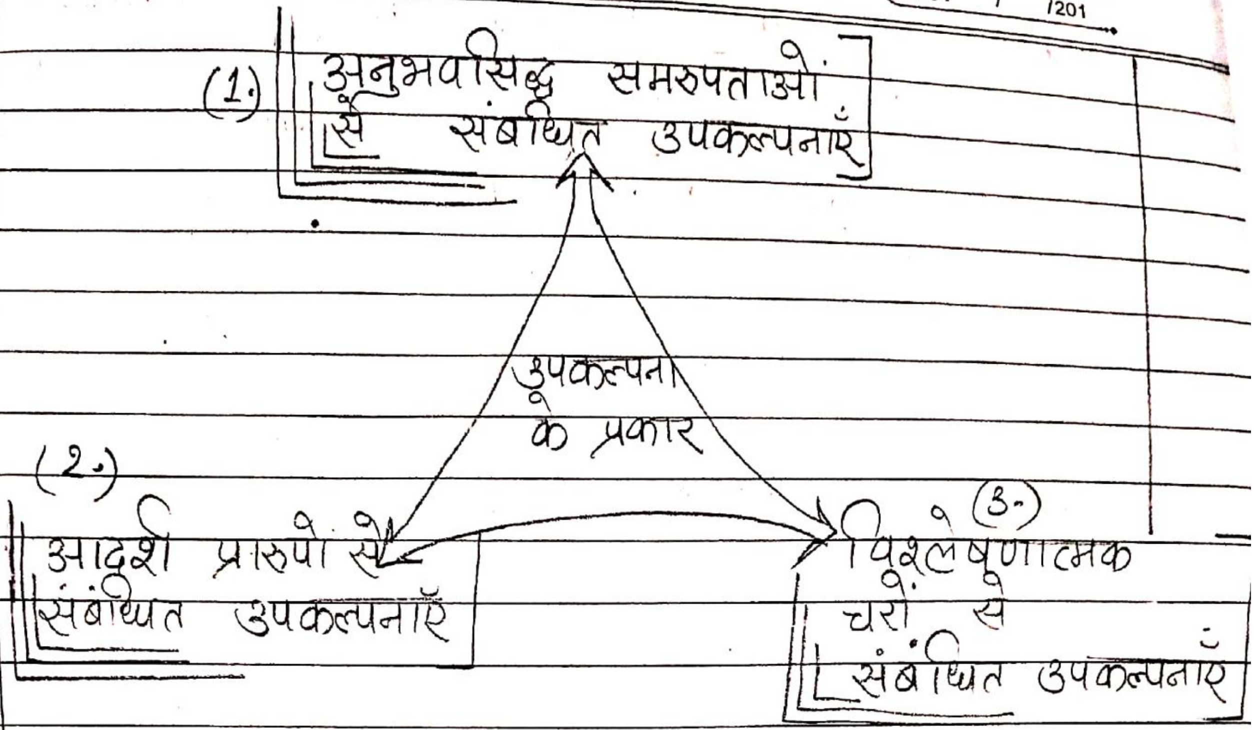

उपकल्पना का महत्व :—
(Importance of Hypothesis)

1.) **अध्ययन की दिशा का निर्धारण**
(Providing Right Direction to the study)

प्रत्येक सर्वेक्षण और अनुसंधान के लिए बहुत अधिक समय और धन की आवश्यकता होती है। ऐसी स्थिति में ~~जब~~ उपकल्पना की सहायता से अध्ययन के लिए एक उचित दिशा मिल जाती है जिससे अध्ययनकर्ता व्यर्थ के परिश्रम, समय और व्यय से बच जाता है।

2.) **अध्ययन - क्षेत्र को सीमित करने में सहायक**
(Helpful in Delimiting the field of study)

Scanned by CamScanner

प्रत्येक अध्ययन विषय के बहुत-से पहलू हो सकते हैं। यदि अध्ययनकर्ता सभी पहलुओं को एक साथ लेकर अध्ययन करना आरंभ कर दे तो किसी भी पहलू की गहराई में जाकर तथ्यों को एकत्रित नहीं किया जा सकता। ऐसी स्थिति में उपकल्पना हमारे अध्ययन-क्षेत्र को सीमित करने में सहायक साबित होता है तथा अनुसंधानकर्ता अपना ध्यान अध्ययन के एक विशेष पहलू अथवा कुछ विशेष तथ्यों पर ही केन्द्रित कर पाता है।

(3.) उपयोगी तथ्यों के संकलन में सहायक (Helpful in collecting Relevant Data)

किसी भी सामाजिक घटना अथवा समस्या का अध्ययन करते समय अध्ययनकर्ता के सामने अनेक प्रकार के तथ्य आते हैं। कभी-कभी उन तथ्यों की उपयोगिता अथवा अनुपयोगिता को न समझ पाने के कारण अध्ययनकर्ता उपयोगी तथ्यों को छोड़कर व्यर्थ के तथ्यों के संकलन में लग जाता है जिससे संपूर्ण अध्ययन अव्यवस्थित और अवैज्ञानिक बन जाता है।

किंतु उपकल्पना के निर्माण से अनुसंधानकर्ता केवल अपने विषय पर ही केन्द्रित रहता है और इस प्रकार वह केवल उपयोगी तथ्यों को ही संकलन करता है।

4.) तर्कसंगत निष्कर्षों में सहायक (Helpful in getting Logical Conclusions)

Scanned by CamScanner

उपकल्पना वह मान्यता है जिसके द्वारा अनुसंधान - कार्य आरंभ करने से पहले ही एक कामचलाऊ निष्कर्ष प्रस्तुत कर दिया जाता है। यह निष्कर्ष सत्य है अथवा असत्य, इसका परीक्षण बाद में एकत्रित तथ्यों के आधार पर किया जाता है। तथ्यों के आधार पर यदि उपकल्पना से संबंधित निष्कर्ष सही प्रमाणित होता है तो उसे एक सामान्य नियम के रूप में स्वीकार कर लिया जाता है।

इस प्रकार उपकल्पना तर्कसंगत निष्कर्षों के प्रतिपादन में सहायक है।

(5.) सिद्धांतों के निर्माण में सहायक
(Contribution in the Construction of theories)

सामाजिक शोध का अंतिम उद्देश्य सिद्धांतों का निर्माण करना होता है। इस कार्य में उपकल्पना की भूमिका सबसे अधिक महत्वपूर्ण प्रमाणित हुई है। उपकल्पना का निर्माण साधारणतया किसी पूर्व-स्थापित सिद्धान्त के आधार पर होता है। उपकल्पना की सहायता से जो सामान्य निष्कर्ष प्रस्तुत किये जाते हैं वे नए सिद्धांतों का निर्माण करने में भी अत्यधिक सहायक होते हैं।

इस प्रकार स्पष्ट होता है कि किसी भी शोध में उपकल्पना का महत्व केन्द्रीय होता है।

Scanned by CamScanner

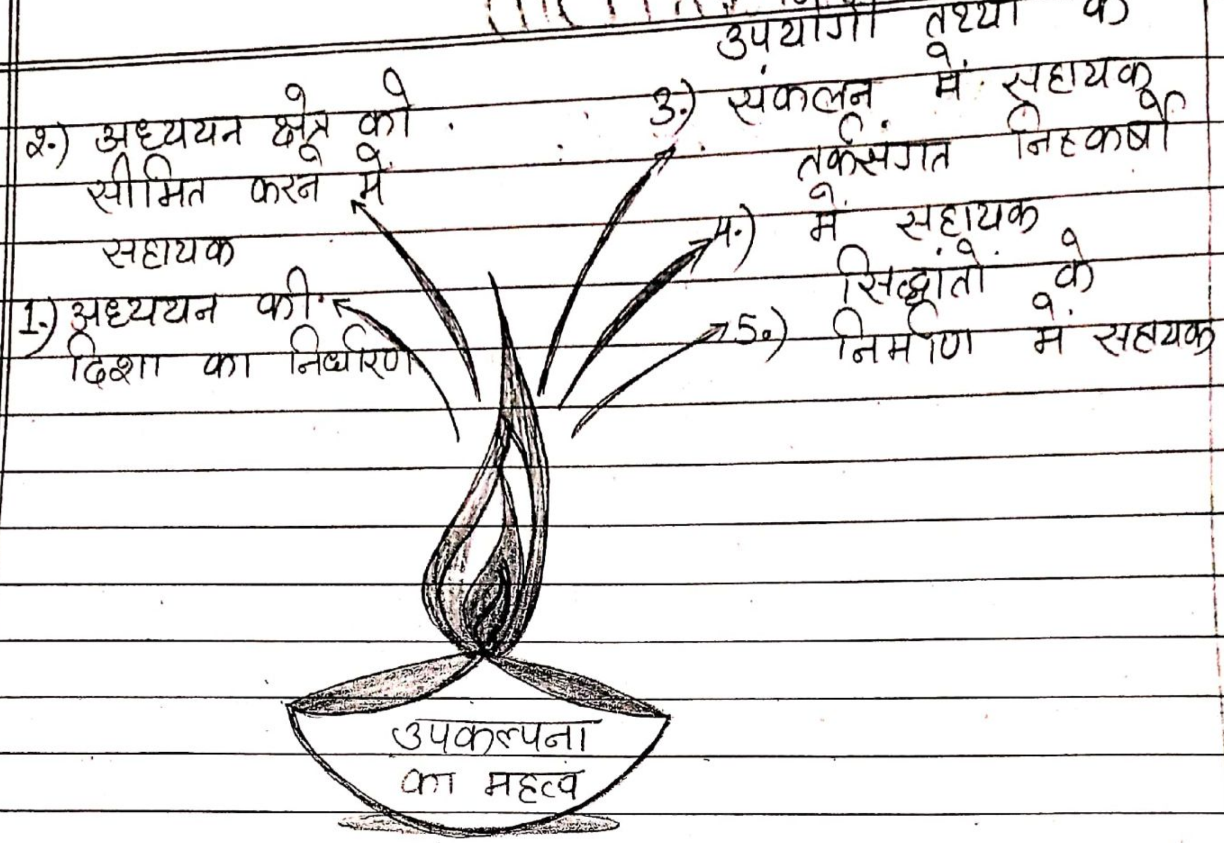

निष्कर्ष :— (Conclusion)

उपर्युक्त सभी विवेचनाओं के आधार पर निष्कर्षस्वरुप यह कहा जा सकता है कि किसी भी अनुसंधान-कार्य की सफलता अनुसंधान के प्रारंभ में बनाई गई उपकल्पनाओं पर ही निर्भर करती है। तथा इसके अभाव में किया गया शोध-कार्य पूर्णतः अवैज्ञानिक साबित होता है।

×××××× ×.××

Scanned by CamScanner